Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, MAR–APR, 2018, VOL- 5/44

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन सम्बंधी कार्यक्रमों का अध्ययन

मुकेश कुमार चंद्राकर[1],Ph. D. & किशन कुमार रात्रे[2]

[1]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर, छ.ग.

[2]एम. एड. प्रशिक्षार्थी, शिक्षा विभाग , गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर, छ.ग.

Abstract

प्रस्तुत शोधपत्र प्रारंभिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य सरकार द्वारा संचालित डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान पर आधारित कार्यक्रमों का अध्ययन किया गया है। इन कार्यक्रमों में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी, शैक्षिक वातावरण निर्माण, अकादमिक निरीक्षण तथा भाषायी कौशल सम्बन्धी कार्यों का प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका को जाना गया है। इस अभियान के लक्ष्य की प्राप्ति के सन्दर्भ में आ रही समस्यायों, बाधाओं तथा कारणों को जानकर, उन्हें दूर करके डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान को बेहतर बनाने में यह शोधपत्र महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करने में सहायता प्रदान कर सकता है,

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :– शिक्षा मानव विकास का एक गतिशील पहलु है। शिक्षा राष्ट एवं समाज के विकास का महत्वपूर्ण साधन हैं। शिक्षा और समाज में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध पाया जाता है क्योंकि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त साधन है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र क लिए प्रथम प्राथमिकता की वस्तु है। राष्ट्रीय जीवन के साथ जितना घनिष्ठ सम्बन्ध प्राथमिक शिक्षा का हैं उतना माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा का नहीं हैं। अतः प्राथमिक शिक्षा की गुणात्मक उन्नयन करके ही समाज एवं राष्ट्र का उत्थान किया जा सकता है। प्राथमिक शिक्षा के सम्बन्ध में संविधान के संकल्प को पूरा करने तथा प्राथमिक शिक्षा का लाभ भारत के कोने–कोन तक उचित रूप में पहुँचाने के लिए आवश्यक है कि प्राथमिक शिक्षा को सर्वव्यापी तथा गुणवत्तापूर्ण बनाया जाये। इसका तात्पर्य यह है कि प्राथमिक शिक्षा का विकास इस ढंग से किया जाये कि प्रत्येक बालक/बालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा सुविधा सुलभ हो तथा वह इसका लाभ वास्तविक रूप में उठाये। प्राथमिक शिक्षा सुविधाओं को सर्वव्यापी तथा गुणवत्तापूर्ण बनाने हेतु प्राथमिक शालाओं में नामांकन एवं प्रतिधारण को सर्वव्यापी बनाना आवश्यक ह। इन सम्पूर्ण पक्षों को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन हेतु केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाएं चलायी गयी। छत्तीसगढ़ राज्य सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन हेतु राजीव गाँधी शिक्षा मिशन, छात्र दुर्घटना बीमा योजना, निःशुल्क पाठ्य पुस्तक प्रदाय योजना, निःशुल्क गणवेश वितरण योजना, राज्य छात्रवृति योजना, पढ़बो–पढ़ाबो स्कूल जाबो योजना तथा डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान आदि योजनाएँ संचालित की गयी ह।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान :—छत्तीसगढ़ में प्राथमिक शिक्षा के गुणवत्ता म सुधार हेतु चार वर्षीय डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान सितम्बर 2015 में प्रारम्भ किया गया है ।

प्रथम वर्ष (2015—16) :— शालाओं का संचालन सौ बिदुओं के चेक लिस्ट के माध्यम के आधार पर करना।

द्वितीय वर्ष (2016—17) :— कक्षाओं का आंकलन रिपोर्ट कार्ड के माध्यम से दस दक्षताओं पर कक्षा की स्थिति।

तृतीय वर्ष (2017 —18) :— प्रत्येक बच्चों की प्रगति के रिकार्ड हेतु उपलब्धो परिक्षण करना।

चतुर्थ वर्ष (2018 —19) :— चार वर्षीय कार्यक्रम की प्रभाविता देखने हेतु शाला का समग्र मूल्यांकन।

इस कार्यक्रम में प्रतिवर्ष सर्वप्रथम सामाजिक अंकेक्षण कर लगभग एक तिहाई शालाओं को फोकस शालाआ के रूप चिहनांकित किया जाता है। फोकस शालाओं के चिहनांकन हेतु 20 बिन्दुओं के रूब्रिक्स के माध्यम से समुदाय द्वारा शालाओं की रेटिंग की जाती है। एक सत्र में दो बार इन शालाओं अकादमिक निरोक्षण किया जाता है और उनमें हो रहे सधार का विश्लेषण किया जाता है। इस अभियान के तहत दस दक्षताओं के आधार पर किसी कक्षा के तीन चौथाई अर्थात् 75 बच्चे उनसे पूछे गए 70 सवालों के जवाब दे सकने की स्थिति में हो तो उस कक्षा को सफल कक्षा माना जायेगा। शालाओं का ग्रेडिंग विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की नियमित उपस्थिति, शिक्षक—छात्र सम्बन्ध, शाला प्रबंधन समिति, शाला विकास योजना, अध्यापन कार्य, माताओं की सक्रियता, शाला में सिखाने का वातावरण, शालेय स्वच्छता एवं अच्छी आदतों का विकास, विभिन्न गतिविधियों का आयोजन, शाला का आकादमिक निरीक्षण और प्रमुख दस दक्षताओं के आधार पर किया जाता है, जो ग्रेडिंग के आधार पर ए तथा बी ग्रेड आने वाले शालाओं को यथावत रूप में रखा जाता है। वही सी तथा डी ग्रेड में आने वाले शालाओं को प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी प्रशिक्षण, प्रिंट—रिच वातावरण,चर्चा पत्र के अनुरूप शाला में सुधार कार्यक्रम, प्रशिक्षण कार्यक्रम,उन्मुखीकरण, नियमित सम्पर्क, अकादमिक निरीक्षण और जन—प्रतिनिधियों द्वारा सतत मानिटरिंग कर गुणात्मक उन्नयन प्राप्त किया जाता है। प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नति हेतु छत्तीसगढ़ राज्य सरकार द्वारा डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान चलाया जा रहा है परन्तु वर्तमान परिदृश्य में ये कहाँ तक गुणात्मक उन्नति को प्राप्त कर पा रहा है या नहीं यह जानना परम आवश्यक है, जो रुपरेखा बनायी गयी है वह अपने उद्दश्य को कहाँ तक प्राप्त कर पा रही है या सिर्फ कागजी रूप में दिखलाई पड़ती है यह जानना आवश्यक है।

अध्ययन का औचित्य/आवश्यकता

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्राथमिक शिक्षा किसी भी व्यक्ति तथा देश के लिए रीढ़ मानी जाती है। प्राथमिक शिक्षा माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा को आधार प्रदान करता है समय काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप प्राथमिक शिक्षा के उदेश्यों में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। इन्ही उदेश्यों को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ राज्य सरकार ने प्राथमिक शिक्षा के लोक–व्यापीकरण एवं गुणात्मक उन्नयन के लिए विभिन्न प्रकार को योजनाएं समय–समय पर चलायी, जिनका प्राथमिक शिक्षा के लोक–व्यापीकरण एवं गुणात्मक सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। छत्तीसगढ़ राज्य सरकार ने प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन हेतु राजीव गाधी शिक्षा मिशन, छात्र दुर्घटना बीमा योजना, निःशुल्क पाठ्य पुस्तक प्रदाय योजना, निःशुल्क गणवेश वितरण योजना, राज्य छात्रवृति योजना, पढ़बो–पढ़ाबो स्कूल जाबो योजना, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान चलाया गया। प्राप्त शोध साहित्य के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता कि इन योजनाओं के क्रियान्वयन से छतीसगढ़ राज्य की प्राथमिक शिक्षा में व्यापक सुधार आया है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान सितम्बर 2015) को प्रारम्भ किया गया है, जिसका वर्तमान समय में क्रियान्वयन हो रहा है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा क्या गुणात्मक उन्नयन प्राप्त कर पा रहा है ? क्या डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों के अधिगम में सुधार हुआ है ? क्या विद्यालय के विभिन्न पक्षों में गुणात्मक सुधार हो रहा है, तथा इस अभियान के समक्ष कौन–कौन सी बाधा आ रही यह जानना आवश्यक होगा, ताकि उन समस्याओं, कारणों, कमियों एवं बाधाओं को दूर कर इस अभियान को बेहतर बनाया जा सके।

शाध प्रश्न :–

1. क्या डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन हेतु जिन कार्यक्रमों का निधारण किया गया है, वह अपने उदश्यों की प्राप्ति कर पा रहा है ?
2. क्या डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के गुणवत्ता उन्नयन हेतु इन कार्यक्रमा के द्वारा प्राथमिक शिक्षा की वास्तविक रूप में गुणात्मक उन्नति हो पा रही है ?
3. क्या डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन हेतु बनाये गए कार्यक्रमों का क्रियान्वयन क्या उचित रूप में हो पा रहा है ?
4. क्या डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन हेतु बनाये गए कार्यक्रमों के समक्ष आ रही बाधाओं को जाना गया है ?

समस्या कथन :– डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा क गुणात्मक उन्नयन सम्बंधी कार्यक्रमों का अध्ययन।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अध्ययन का उद्देश्य :–

1. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के गुणवत्ता उन्नयन हेतु प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी द्वारा किये गए कार्यों का अध्ययन करना।

2. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के गुणवत्ता उन्नयन हेतु शैक्षिणिक वातावरण निर्माण हेत किये गए कार्यों का अध्ययन करना।

3. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के गुणवत्ता उन्नयन हेतु अकादमिक निरोक्षण कि स्थिति का अध्ययन करना।

4. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के गुणवत्ता उन्नयन हेतु विद्यार्थियों में भाषायी कौशल विकास की स्थिति का अध्ययन करना।

शोध अभिकल्प, प्रकृति एवं विधि :– प्रस्तुत शोध की प्रकृति इस अध्ययन को गुणात्मक शोध की प्रकृति में रखती है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक शोध के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति की गयी है।

जनसंख्या एवं न्यायदर्श :– प्रस्तुत अध्ययन में छतीसगढ़ राज्य के जांजगीर–चांपा जिले के अन्तर्गत संचालित डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अन्तर्गत समस्त सी. व डी. ग्रेड के 487 शासकीय प्राथमिक शालाओं का जनसँख्या के रूप में लिया गया है। न्यायदर्श के रूप में जांजगीर–चांपा जिले के मालखरौदा ब्लाक से डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के प्रथम वर्ष के शालाओं की सी. व डी. ग्रेड वाले शालाओं की सूची प्राप्त कर इन शालाओं में से न्यायदर्श के रूप में 18 शासकीय प्राथमिक शालाओं को साधारण यादृच्छिक न्यायदर्श प्रविधि से न्यादर्श का चयन किया गया है। जिसमें 46 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं तथा 5वों कक्षा के 140 विद्यार्थियों का न्यायदर्श के रूप में लिया गया है।

प्रयुक्त उपकरण का विवरण :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन के लिए शिक्षकों हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली एवं विद्यार्थियों हेतु स्वनिर्मित भाषा कौशल परीक्षण उपकरण का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावलो में प्रमुख तीन आयाम थे, जिसमें प्रोफेशनल लर्निग कम्युनिटी, शैक्षिक वातावरण निर्माण एवं आकादमिक निरोक्षण पर आधारित बद तथा खुले प्रकार के 45 प्रश्न है। बंद प्रकार के प्रश्न हेतु हाँ एवं नहीं के विकल्प का निर्धारण किया गया है साथ ही खुले प्रकार के प्रश्नों हेतु रिक्त स्थानों की पूर्ति लिखित रूप मे करने पर्याप्त स्थान दिया गया है। द्वितीय उपकरण हिन्दी भाषा कौशल परीक्षण पर आधारित है, जिसमें हिन्दी स्वर, वर्ण, शब्द, वाक्य, वाक्यांश, वर्तनी का ज्ञान या अवबोध एवं कल्पनाशक्ति, तर्कशक्ति, चिन्तनशील लेखन पर आधारित कुल 13 प्रश्न थे, जिसमें कुल 50 अंक निर्धारित है। इस स्वनिर्मित भाषा कौशल परीक्षण के निर्माण में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के तहत प्रकाशित ट्रेंनिग मैन्युअल, अकादमिक निरीक्षण, शालाओं के सामाजिक अंकेक्षण विवरणिका तथा कक्षा पाँचवी की पाठ्यपुस्तिका के आधार पर प्रश्नों का निर्माण किया गया है।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रदत्त विश्लेषण के लिए प्रयुक्त सांख्यिकी :– प्रदत्ता के विश्लेषण के लिए प्रतिशत वर्णनात्मक सांख्यिकी तथा पदों के विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं अर्थापन :– शोधकर्ता द्वारा उदेश्यों की प्राप्ति हेतु जो प्रदत्त संकलित किए गए ह, उन प्रदत्तों के विश्लेषण का विवरण अध्ययन के निर्धारित उदेश्यों के क्रम में अग्रलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है :–

1. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन हेतु प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी द्वारा किये गए कार्यो पर आधारित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं अर्थापन :– प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 52.48 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का अभिमत है कि वे प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के व्हाटसएप, फेसबुक ग्रुप से जुड़ें ह। खुले प्रश्न में उन्होंने स्पष्ट किया कि वे संकुल, ब्लाक, जिला एवं राज्य स्तर के विभिन्न समूहों से जुड़े ह। वही 47.82% शिक्षक एवं शिक्षिकाएं प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के इन समूहों से जुड़े ही नहीं ह। इसका कारण उन्होंने खुले प्रश्नों मे बताया कि शिक्षकों के पास इन समूहों के संदर्भ में "पर्याप्त जानकारी का आभाव का होना", साथ ही कुछ शिक्षकों के पास "स्मार्ट फोन न होना" प्रमुख है। 30.43% शिक्षक/शिक्षिकाओं का अभिमत है कि प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी समूहों विषय विशेषज्ञ है तथा 69.57% शिक्षकों का मानना है कि इन समूहों में कोई विषय विशेषज्ञ ही नहीं है। 52.17% शैक्षणिक फोटो, विडियो तथा नवाचार सम्बंधित विचार साझा नहीं करते ह। 43.48% शिक्षक एवं शिक्षिकाएं प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी समुहों द्वारा प्राप्त संसाधनों का अपने कक्षा–कक्ष में उपयोग करते ह। परन्तु अधिकतर (56%) शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा इन समुहों से प्राप्त संसाधनों का अपने विद्यालयी कक्षा–कक्ष का सार्थक बनाने में नहीं करते है। 52.18% शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी द्वारा विद्यालयी समस्याओं पर विचार–विमर्श उचित रूप में नहीं करते है। 52.18% शिक्षक एवं शिक्षिकाएं अपने विद्यालयी कक्षा–कक्ष में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी का प्रयोग करते है। 71.74% शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने नवीन शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण किया है, खुले प्रश्न में शिक्षकों ने बताया कि उन्होंने वायु सूचक यंत्र, दिशा सूचक यंत्र स्टेथिस्कोप, घर्षण की अवधारणा तथा दिन–रात जैसी शिक्षण सहायक सामग्रियों का निर्माण किया है, जबकि 28.26% शिक्षकों ने कोई भी शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण नहीं किया है। प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी द्वारा 54.14% शिक्षक/शिक्षिकाओं का शाला सुधार सम्बंधित जानकारी प्राप्त नहीं होती है। प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के व्हाट्सएप समूहों में अनावश्यक पोस्ट बहुत ही कम (13.14%) किया जाता है। 82.16% शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी प्रशिक्षण के दौरान बताई गयी बातों को वे अपन कक्षा–कक्ष में क्रियान्वयन करते है। 50% विद्यालयों में चर्चा पत्र के अनुरूप कोई भी सक्रिय कार्यक्रम नहीं कराया जाता है। इसका प्रमुख कारण शिक्षकों को "चर्चा पत्र प्राप्त न होना" तथा "चर्चा पत्र के सम्बन्ध में प्रर्याप्त जानकारी न होना" है।

2. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के गुणवत्ता उन्नयन हेतु शैक्षिणिक वातावरण निर्माण हेतु किये गए कार्यों से सम्बंधित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं अर्थापन :– प्रस्तुत अध्ययन के उदेश्य (क्रमांक 2) की प्राप्ति हेतु शोधकर्ता द्वारा प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण किया जो अग्रलिखित रूपों में स्पष्ट है कि विद्यालयों की दीवारों पर अवलोकित सुविचार, सामान्य ज्ञान, राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान, चार्ट, मैप आदि के रूप में एक प्रिंट–रिच वातावरण का निर्माण करता है। वही वॉल मैग्जीन सम्बंधित क्रियाकलाप का क्रियान्वयन शैक्षिणिक वातावरण निर्माण

हेतु उचित रूप में किया जा रहा है। रीडिंग कार्नर विद्यालयों में उपलब्ध तो है जिसका उपयोग शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियो को भाषायी कौशल सिखाने में करते है, परन्तु विद्यार्थियों द्वारा स्वयं रीडिंग कार्नर का उपयोग अपनी भाषायो दक्षता सीखने में नहीं करते ह। मैथ कार्नर का 89.14% विद्यालओं में उपलब्ध है, जिनका अनुप्रयोग शिक्षक अपने विद्यालयी कक्षा–कक्ष में करते ह। शत्–प्रतिशत विद्यालयो में स्मार्ट गणित किट उपलब्ध है जिसका नियमित उपयोग शिक्षण कार्यों में किया जाता है। अधिकांशतः (91.31%) विद्यालयों में विद्यार्थियों को सीखन–सिखाने हेतु छोटे–छोटे समूहों में कार्य प्रदान किया जाता है।

3 डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के गुणवत्ता उन्नयन हेतु अकादमिक निरीक्षण की स्थिति से सम्बंधित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं अर्थापन :– इस उदेश्य की प्राप्ति हेतु शोधकर्ता द्वारा प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण से स्पष्ट है कि 80.44% विद्यालयों में अकादमिक निरीक्षण हुआ है, जिनमें शत्–प्रतिशत अकादमिक निरीक्षण डायरी का संधारण किया जाता है। निरीक्षणकर्ता द्वारा रजिस्टर या डायरी पर अपने सुझाव भी लिखे जाते ह। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के तहत् क्रियान्वित विभिन्न कार्यों का निर्धारण होता है, जिसमें जनप्रतिनिधि (सरपंच,उपसरपंच,पंच,सचिव,जनपद सचिव,विधायक) तथा विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी द्वारा निरन्तर निरीक्षण एवं मानीटरिंग कर काया का उचित निर्वाहन किया गया है। 91.31% विद्यालयों में निरीक्षण अधिकारियों द्वारा कक्षा–कक्ष कि स्थिति का अवलोकन तथा विद्यालयी समस्याओं पर विचार–विमर्श किया गया है। 95.66% शिक्षकों का अभिमत है कि निरीक्षण अधिकारियों द्वारा विद्यालय के शाला प्रबन्धन समिति, शिक्षकों की उपस्थिति, तथा कक्षा क्रियान्वयन कि जानकारी ली गई है। निरीक्षण अधिकारियों द्वारा लगभग सभी विद्यालयों में विद्यार्थियों से विचार–विमर्श, पाठ्यक्रम प्रगति सम्बंधित तथा शाला विकास योजना सम्बंधित जानकारी लिया गया है, वही 93.48% विद्यालयों म आकस्मिक निरीक्षण भी हुआ है।

4. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा के गुणवत्ता उन्नयन हेतु विद्यार्थियों में भाषायी कौशल विकास की स्थिति सम्बंधित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं अर्थापन

भाषायी कौशल परीक्षण से सम्बंधित प्रदत्तों का विश्लेषण हिन्दी भाषा के उपआयाम वर्ण विचार, शब्द विचार, वाक्य विचार, कल्पनाशक्ति लेखन कौशल तथा भाषायी त्रुटियों के आधार पर क्रमशः किया गया है जो अग्रलिखित है :–

4.1 वर्ण विचार से सम्बंधित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं अर्थापन :– वर्ण विचार से सम्बंधित प्रदत्तों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि बालकों की आपेक्षा बालिकाओं की औसतन प्रतिशत अंक स्वर सम्बंधित ज्ञान में अधिक है, परन्तु बालक एवं बालिकाओं का औसतन प्रतिशत 66.01% है, जो की डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के निर्धारित मानक (75%) से कम है । 63.26% औसतन अंक विद्यार्थियों ने उचित वर्णों के आधार पर शब्द पूरा करने तथा 55.13% औसतन अंक उचित वर्णों के प्रयोग से सम्बन्धित प्राप्त किया, जो की डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के निर्धारित मानक (75%) के अनुरूप नहीं है । 86.96 % विद्यालयों में प्रिंट–रिच वातावरण (रिडिंग कार्नर, वॉल मैगजीन, चार्ट, मैप आदि) उपलब्ध होने के पश्चात् इनका सार्थक परिणाम विद्यार्थियों के वर्ण विचार में नहीं मिल पा रहा है।

4.2 शब्द विचार से सम्बंधित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं अर्थापन :– विद्यार्थियों द्वारा विलोम शब्द तथा पर्यायवाची शब्द से सम्बंधित प्राप्त औसतन प्रतिशत क्रमशः 65.84% तथा 61.55% है। विद्यार्थियों का शब्द विचार से सम्बंधित कुल औसतन प्राप्तांक 54.34% है, जिसमें बालिकाओ का 53.86% तथा बालकों का 54.86% है, जो कि डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता के निर्धारित मानक (75%) के

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अनुरूप नहीं है। वही शब्द के आधार पर लिंग पहचानने में विद्यार्थियों का औसतन प्रतिशत 35.65 प्राप्त हुआ, जो कि इस अभियान के अपेक्षित स्तर के अनुरूप नहीं है।

4.3 वाक्य विचार से सम्बंधित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं अर्थापन :– मुहावरे से वाक्य संरचना का निर्माण करने में बालिकाओं ने 24.69% तथा बालकों ने 16.67% अंक प्राप्त किया, जिसका औसतन प्रतिशत बहुत ही कम (20.68%) है। विद्याथियों का (बाजार) शब्द से वाक्य संरचना का निर्माण कर पाने की दक्षता से सम्बंधित औसतन प्रतिशत 50.63% है, जिसमें बालिकाओं का 51.25% तथा बालकों का 50% प्राप्त अंक शामिल है। वाक्य शुद्ध करके लिखने से सम्बंधित प्रश्न क्रमांक 9 में बालिकाओं ने 48. 75% तथा बालकों ने 42.29% अंक प्राप्त किया, जिसका औसतन प्रतिशत 45.52 है। वाक्यांश से सम्बंधित संकल्पनाओं में विद्यार्थियों ने औसतन 60% अंक प्राप्त किया है। सम्पूर्ण रूप से वाक्य विचार में विद्यार्थियों को 44.21% औसतन अंक प्राप्त हुआ, जिसमें बालिकाओं को 46.79% तथा बालकों को 41. 61% औसतन अंक प्राप्त हुआ।

अतः इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों में मुहावरों से वाक्य संरचना बनाने, शब्दों से वाक्य संरचना का निर्माण करने, वाक्य संरचना को शुद्ध रूप में लिख पाने तथा वाक्यांशों को संकल्पनाओं का उचित रूप में विकास नहीं हो पाया है। विद्यार्थियों को कर्ता, कर्म, क्रिया एवं संज्ञा सम्बंधित उचित संज्ञान का न होना इसके प्रमुख कारण है।

4.4 कल्पनाशक्ति तथा लखन कौशल पर आधारित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं अर्थापन :– कल्पनाशक्ति तथा लेखन कौशल पर आधारित दो प्रमुख प्रश्न है। प्रश्न क्रमांक 1 में विद्यार्थियों को अपनी पाठशाला क बारे में पांच वाक्य लिखना था। जिसमें प्रत्येक वाक्य पर 1 अंक एवं कुल अंक 5 निर्धारित किया गया था। प्रश्न क्रमांक 1 में बालिकाओं ने 46.88% तथा बालकों ने 46.17% अंक प्राप्त किया, तथा बालक एवं बालिकाओं का औसत प्रतिशत 46.52 प्राप्त हुआ। प्रश्न क्रमांक 13 कल्पनाशक्ति तथा लेखन कौशल पर आधारित है, जिसमें चार चित्र को तार्किक क्रम में जोड़कर विद्यार्थियों को एक कहानी लिखना था। प्रश्न क्रमांक 13 में कुल 10 अंक निर्धारित किया गया था, जिसमें बालिकाओं ने 26.69% तथा बालकों ने 27% अंक प्राप्त किया। वही बालक एवं बालिकाओं का औसतन प्रतिशत 26. 84:% है। सम्पूर्ण रूप में कल्पनाशक्ति तथा लेखन कौशल पर बालिकाओं तथा बालकों को 36.68% औसतन अंक प्राप्त हुआ।

अतः इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति तथा लेखन कौशल का विकास अपेक्षित स्तर से बहुत ही कम है। जो मानक (75%) डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के तहत निर्धारित किया गया है उस मानक के अनुरूप कल्पनाशक्ति तथा लेखन कौशल का विकास नहीं हुआ है ।

4.5 भाषायी त्रुटि सम्बंधित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं अर्थापन :– भाषायी त्रुटि से सम्बंधित प्रदत्तों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ओसतन 69.5% विद्यार्थियों ने पूर्ण विराम से सम्बंधित त्रुटियां की है, वही औसतन 54.5%विद्यार्थियों ने अल्प विराम संबंधी त्रुटि की है, जिसमें बलिकाकाओं ने 50% तथा बालकों ने 55% त्रुटियाँ की है । शाब्दिक त्रुटियों में श, ष, या स, व तथा ब सम्बंधित औसतन 66.5% विद्यार्थियों ने त्रुटि की है, औसतन 71. 5% विद्यार्थियों ने मात्रा सम्बंधित त्रुटियाँ की हैं, जिसमें उन्होंने अ, आ, इ, ई तथा उ व ऊ सम्बंधी त्रुटियाँ अधिकतर की ह। बालिकाओं ने सबसे अधिक (73%) मात्रा सम्बंधित त्रुटियाँ की है। औसतन 58% विद्यार्थियों ने लिंग सम्बंधी भाषायी त्रुटियाँ की है। औसतन 50. 5% विद्यार्थियों न वाक्य विन्यास सम्बंधित भाषायी त्रुटियाँ की ह। औसतन 58 % विद्यार्थियों ने मातृभाषा छत्तीसगढ़ी का उपयोग हिन्दी भाणायी कौशल परीक्षण में किया है। औसतन 29.5% विद्यार्थियों ने अंग्रेजी

भाषा का उपयोग हिन्दी भाषायी कौशल परीक्षण में किया है, जिसमें 34% बालिकाओं तथा 25% बालकों ने अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया है।

निष्कर्ष :— इस शोध के परिपक्ष्य में यह निष्कर्ष निकलता है कि प्राथमिक शिक्षा को गुणवत्ता उन्नयन के लिए छत्तोसगढ़ सरकार द्वारा संचालित डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जो कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा रहा है उसकी प्राप्ति आपक्षित स्तर के अनुरूप नहीं हो पायी है। इस अभियान के समक्ष जो प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी, शैक्षिक वातावरण, अकादमिक निरीक्षण तथा भाषायी कौशल से सम्बन्धी काया में विभिन्न समस्याएं अवरोध उत्पन्न कर रही ह। शिक्षकों का प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी में न जुड़े होने में स्मार्ट फोन तथा इन समूहों के संदर्भ में पर्याप्त जानकारी का आभाव है, वही विद्यालयों में रीडिंग कार्नर, वॉल मैग्जीन, तथा प्रिंट रिच वातावरण (सुविचार, सामान्य ज्ञान, राष्ट्रगीत, राष्टगान, चार्ट, मैप आदि) उपलब्ध होते हुए भी विद्यार्थियों के भाषायी कौशल (वर्ण विचार, शब्द विचार, वाक्य विचार,कल्पनाशीलता लेखन कौशल) में सार्थक परिणाम प्राप्त नहीं हुए है। विद्यार्थियों में मुहावरों से वाक्य संरचना बनाने, शब्दों से वाक्य संरचना का निर्माण करने, वाक्य संरचना को शुद्ध रूप में लिख पाने तथा वाक्यांशों को संकल्पनाओं का उचित रूप में विकास नहीं हो पाया है। विद्यार्थियों को कर्ता, कर्म, क्रिया एवं संज्ञा सम्बंधित उचित ज्ञान का न होना इसकी प्रमुख कारण है। विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति तथा लेखन कौशल का विकास अपेक्षित स्तर से बहुत ही कम (26.84%) है। विद्यार्थियों में पूर्ण विराम, अल्प विराम, शाब्दिक, मात्रिक, लिंग, वाक्य विन्यास, मातृभाषा तथा अंग्रेजी भाषा सम्बंधित त्रुटियाँ हिन्दी भाषा कौशल में औसतन 57.25% है, अतः इससे यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों में हिन्दो भाषा सम्बंधी विभिन्न त्रुटियाँ ह। इस अभियान के तहत् क्रियान्वित विभिन्न कार्यों का निर्धारित समय पर आकादमिक होने के पश्चात् गुणवत्ता प्राप्त नहीं हुई है। प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का सफल क्रियान्वयन भी नहीं हो पा रहा है। इन प्राप्त तथ्यों के आधार पर डॉ. ए.पो.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के कार्यों के क्रियान्वयन में व्यापक सुधार की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :—

सिंह, एच. (2005). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा का आधार एवं विकास. मेरठः आर. लाल. बुक डिपो.

पालन, बी.के.(2009). प्राथमिक स्तर पर अध्यापक कार्य. दयालपुर दिल्लीः जे. बी. टी. पब्लिसिंग हाऊस.

पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस. के. (2008) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा के आधार एवं विकास. आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन.

सक्सेना, एन. आर. एस. एवं चतुर्वेदी, एस. (2010) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा. मेरठः आर. लाल. बुक डिपो.

शर्मा, जे.एल.(2010). शिक्षा तथा उदीयमान भारतीय समाज. मेरठः आर. लाल. बुक डिपो.

टंडन, राजर्षि.(2014). भारतीय शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि.इलाहाबादः राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय.

गुप्ता, एस. (2014). भारतीय शिक्षा का इतिहास : समस्याएं एवं समाधान, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.

दुबे, एस.(2006). बिलासपुर जिले के शैक्षिणिक शालाओं में क्रियान्वित पढबों–पढाबो स्कूल जाबो योजना का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन, अप्रकाशित.शासकीय उन्नत शिक्षण संस्थान, बिलासपुर (छ.ग.).

स्कूल साक्षरता विभाग (01/12/2017),,छतीसगढ़ सरकार रिट्रायड फ्राम http://eduportal.cg.nic.in/Schemes/Free_Text_Book.aspx

स्कूल साक्षरता विभाग (22/01/2017),,M.H.R.D. रिट्रायड फ्राम http://mhrd.gov.in/overview--education

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies